International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बौद्ध भिक्षुणी संघ की स्थापना : एक अध्ययन

डॉ0 प्रदीप सिंह

विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, टी0डी0पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में न केवल परिवार की स्त्रियों का पुरूषों के समान धर्म का पालन करने का अधिकार था अपितु उन्हें पुरूषों के समान गृहावास त्यागकर महात्मा बुद्ध के द्वारा स्थापित संघ में प्रवेश करने का भी अधिकार प्राप्त हो गया था। संघ में पुरूष एवं नारी क्रमशः भिक्षु एवं भिक्षुणी के रूप में रहकर दुःखों के विनाश के लिए साधना करते थे। महात्मा बुद्ध द्वारा भिक्षुणी संघ की स्थापना का इतिहास भिक्षु संघ से सर्वथा भिन्न है। महात्मा बुद्ध ने जिस समय अपने धर्म का प्रवर्तन किया था उस समय केवल भिक्षु संघ की स्थापना की थी और उसके विस्तार के लिए अथक प्रयास किया था किन्तु उन्होंने भिक्षुणी संघ की स्थापना भिक्षु संघ की स्थापना के 5 वर्षो बाद अनिच्छापूर्वक की कि थी। किन्तु उनके द्वारा भिक्षुणी संघ की स्थापना का नारियों ने हृदय से स्वागत किया था तथा उसमें प्रविष्ट होने के लिए अभूतपूर्व उत्साह दिखलाया था। डॉ0 अरूण प्रताप सिंह ने अपने शोध प्रबन्ध में भी इसी बात की पुनरावृत्ति की है।[1] चुल्लवग्गा से ज्ञात होता है कि बौद्ध भिक्षुणियों के संघ की स्थापना में महात्मा बुद्ध के परम शिष्य आनन्द का महत्वपूर्ण योगदान था, क्योंकि प्रारम्भ में महात्मा बुद्ध को महाप्रजापति गौतमी को संघ में लेने के लिए आनन्द ने ही प्रेरित किया था।[2] बौद्ध संघ में भिक्षुणी संघ की स्थापना का द्वितीय श्रेय महात्मा बुद्ध की क्षीरदायिका माता महाप्रजापति गौतमी को दिया गया है।[3] संघ में प्रविष्ट होने के लिए उन्होंने दो बार प्रयत्न किया था। प्रथम प्रयास उन्होनें उस समय किया था जब महात्मा बुद्ध कपिलवस्तु में न्योधाग्राम वन में ठहरे हुए थे उस समय गौतमी ने उन से प्रवज्या प्रदान करने का निवेदन किया जिसे महात्मा बुद्ध ने कठोरता से मना कर दिया।[4] किन्तु इससे महाप्रजापति गौतमी निराश नहीं हुई अपितु प्रवज्या पाने के लिए अत्यधिक प्रयत्नशील हो गई। गौतमी ने प्रव्रज्या पान के पूर्व ही प्रव्रजित व्यक्ति जैसी वेशभूषा धारण कर लिया। उन्होंने अपने केशों को कटवाकर काषाय वस्त्र धारण कर लिया। वे कपिलवस्तु से वैशाली तक पैदल आई जिसका कारण यह था कि महात्मा बुद्ध केवल नारी की शारीरिक दुर्बलता के कारण संघ में प्रवेश देने के अयोग्य न समझ सके।[5] द्वितीय बार का उनका आचरण बिल्कुल भिक्षुणियों जैसा था। सम्भवतः इसके माध्यम से वह स्त्रियों के प्रति महात्मा बुद्ध की शंका को मिटाना चाहती थी। और यह प्रमाणित करना चाहती थी कि पूर्ववत जीवन में सुख-सुविधाओं का उपयोग करने के अनन्तर उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियां भी कठोर व्रत धारण कर सकती थी।[6] विनय पिटक में गौतमी के कपिलवस्तु से जब वो वैशाली पहुंची इस प्रवास का विस्तृत वर्णन किया गया है किस

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रकार वैशाली के महावन की कूटागारशाला में गौतमी फूले पैरों, धूल भरे शरीर एवं परेशान होकर द्वार कोष्ठक के बाहर खड़ी हो गई थी। गौतमी की यही पर महात्मा बुद्ध के परम शिष्य आनन्द से भेंट हुई। गौतमी की यह दशा देखकर वे दुःख से अभिभूत हो गए और स्वयं महात्मा बुद्ध के पास जाकर गौतमी की संघ में प्रवेश देने की प्रार्थना की। किन्तु आनन्द का प्रयास असफल रहा। आनन्द ने महात्मा बुद्ध से तीन बार प्रार्थना की और तीनों बार महात्मा बुद्ध ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया।[7] तब आनन्द ने दूसरे प्रकार से प्रव्रज्या की आज्ञा मांगने की सोची। उन्होंने महात्मा बुद्ध से प्रश्न किया कि क्या तथागत प्रवेदित धर्म में स्त्रियां सीतापत्तिफल, सकृदागामि फल, अनागामि फल एवं अहंत्व को प्राप्त कर सकती है, महात्मा बुद्ध ने हां कहने पर आनन्द ने यह तर्क दिया कि– ''यदि मन्ते, तथागत द्वारा प्रवेदित धर्म में प्रव्रजित हो स्त्रियां अंहत्व फल को साक्षात् करने योग्य है, तो अभिभाविका, क्षीरदायिका, पोषिका, आपकी मौसी प्रजापति गौतमी को, जो बहुत उपकार करने वाली है, जिसने जननी के मरने पर उन्होंने भगवान को दूध पिलाया है, प्रव्रज्या मिलनी चाहिए[8] महात्मा बुद्ध आनन्द के तर्क से शान्त हो गए और उन्होंने गौतमी के साथ अन्य स्त्रियों को बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति दे दी। किन्तु गौतमी तथा अन्य स्त्रियों को प्रव्रज्या का निर्देश देने के पहले उन्होंने आठ शर्तो के पालन का निर्देश दिया जिन्हें बौद्ध साहित्य में 'अट्ठगुरू धम्म' कहा गया है।[9] इस प्रकार आनन्द के तर्को एवं गौतमी के प्रयासों से स्त्रियों को संघ में प्रवेश की अनुमति प्राप्त हुई और कालान्तर में भिक्षुणी संघ की स्थापना सम्भव हुई। नियम का प्रतिपादन करने से पूर्व जीवन पर्यन्त बातों से विरत रहने का उल्लेख किया है। 1–हिंसा से विरत रहना। 2–अदत्तादान (बिना दिये कोई वस्तु न लेना से विरत रहना) 3–काम सम्बन्धी कार्यो से विरत रहना। 4–झूठ बोलने से विरत रहना। 5–सुर गंध के सेवन से विरत रहना आदि।[10]महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अष्टगुरू धर्मो को प्रजापति गौतमी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह समाचार महात्मा बुद्ध को आनन्द से मिला, तब उन्होंने आनन्द से कहा था कि आनन्द! यदि तथागत प्रवेदित धर्म नियम में स्त्रियां प्रव्रज्या न पाती तो यह धर्म चिरस्थायी होता, यह सहस्त वर्ष ठहरता। परन्तु आनन्द! स्त्रियों ने प्रव्रज्या ग्रहण की, अतः ब्रह्मचर्य चिरस्थायी नहीं रहेगा और यह सधर्म500 वर्ष ही ठहरेगा।[11] चुल्लवग्ग से ज्ञात होता है कि बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश से भिक्षुओं के ब्रह्मचर्य के स्खलित होने का भय था और महात्मा बुद्ध संघ में स्त्रियों के प्रवेश से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों के प्रति चिन्तित थे। इसलिए उन्होंने भिक्षुणियों के लिए अष्ट गुरू धर्म की शर्तो का प्रावधान बनाया। यह यावज्जीवन पालनीय धर्म था जिसका अतिक्रमण करना सम्भव नहीं था। ये अष्ट गुरू धर्म निम्न थे– 1–सौ वर्ष की उपसम्पन्न भिक्षुणी की संघ : उपसम्पन्न भिक्षु का अभिवादन करना चाहिए, उसके सम्मान में खड़ा होना चाहिए तथा अंजलि जोड़ना चाहिए और समीचि कर्म (कुशल समाचार) पूछना चाहिए। भिक्षुणी, गुरूधर्म प्रथम। 2–वर्षाकाल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

में भिक्षुरहित ग्राम या नगर में किसी भी भिक्षुणी को वर्षावास नहीं करना चाहिए– भिक्षुणी विनय गुरू धर्म सप्तम। 3–प्रति 15 दिन बाद भिक्षुणी को भिक्षु संघ से उपीसथ और धर्मोपदेश (उवाद) की तिथि पूछनी चाहिए– भिक्षुणी विनय गुरूधर्म षष्ठ। 4–वर्षाकाल के बीत जाने पर प्रत्येक भिक्षुणी को दोनों संघों के समक्ष दृष्टि श्रुत एवं परिशंकित दोषों की प्रचारणा करनी चाहिए– भिक्षुणी विनय गुरूधर्म अष्टम। 5–गम्भीर दोष करने पर भिक्षुणी की दोनों संघों के समक्ष पक्ष मानस करना चाहिए– भिक्षुणी विनय गुरूधर्म पंचम। 6–दो वर्ष में षड्धर्मो को सीखाने वाली शिक्षमाता की दोनों संघों से उपसम्पदा प्राप्त करनी चाहिए– भिक्षुणी विनय गुरूधर्म द्वितीय। 7–किसी भी भिक्षुणी का किसी भिक्षु के प्रति अभ्रद शब्द नहीं बोलना चाहिए।[12] 8–किसी भी भिक्षुणी को किसी भिक्षु को उपदेश नहीं देना चाहिए– भिक्षुणी विनय गुरूधर्म तृतीय।इन धर्मो का पालन करने पर ही कोई नारी बुद्ध संघ में प्रविष्ट हो सकती थी। भिक्षुणी संघ के लिए इन अष्टगुरू धर्मो की आवश्यकता को सिद्ध करने के लिए महात्मा बुद्ध ने चार लौकिक उदाहरण दिये।[13]1–जैसे वह परिवार चोरों द्वारा आसानी से नष्ट कर दिया जाता है जिसमें स्त्रियां अधिक हो तथा पुरूष कम। 2–जैसे पके हुए धान के खेत में सफेदा (संतट्ठिका) रोग लग जाने से वह खेत नष्ट हो जाता है। 3–जैसे तैयार ईख के खेत में मंजिटिट्का (एक प्रकार का लाल रोग) रोग लग जाने से वह नाश को प्राप्त हो जाता है। 4–जैसे मनुष्य पानी के रोकथाम के लिए मेड़ बाधता है, उसी प्रकार मैंने अतिचारों को रोकने के लिए भिक्षुणियों के लिए यावज्जीवन अतिक्रमण न करने योग्य अष्ट गुरूधर्म को प्रतिष्ठित किया।[14]महात्मा बुद्ध द्वारा दिए गए ये उदाहरण प्रतीकात्मक थे। धान के खेत में सैटट्ठिका तथा ईख के खेत में मज्जिट्ठिका रोग सन्यास जीवन में दोषों के प्रतीक थे। इस प्रकार बुद्ध संघ में नारियों का प्रवेश प्रारम्भ हुआ। कुछ भी हो बौद्ध धर्म के संघ में स्त्रियों को प्रवेश का अधिकार दिलाकर स्थविर आनन्द ने अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया। राजगृह की प्रथम बौद्ध संगीति में अपने इस क्रान्तिकारी विचारधारा के कारण आनन्द को हुक्कर के दण्ड का दोषी भी बताया गया है।[15] उनके इस कार्यो से प्रभावित होकर भिक्षुणियों ने उनके प्रति हमेशा आदर प्रदर्शित किया। चतुर्थ शताब्दी ई0 में चीनी यात्री फाहियान ने मथुरा में आनन्द की स्मृति में निर्मित एक स्तम्भ के प्रति भिक्षुणियों को सम्मान प्रदर्शित करते हुए देखा था[16] उनके इस कथन की पुष्टि उसके लगभग दो शताब्दी बाद आने वाले चीनी ह्वेनसांग ने भी की है।[17] उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि बौद्ध भिक्षुणी संघ की स्थापना महात्मा बुद्ध के विचारों के विपरीत तथा आशंकाओं के साथ हुई थी और बौद्ध भिक्षुणी महाप्रजापति गौतमी को संघ की स्थापना के लिए बार–बार अनुनय विनय करना पड़ा किन्तु जैन भिक्षुणी संघ में ऐसा नहीं था। जैन भिक्षुणी संघ की स्थापना जैन भिक्षु संघ के साथ ही साथ की गई थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ

1. डॉ0 अरूण प्रताप सिहं : जैन एवं बौद्ध भिक्षुणी संघ, पृ0–6
2. चुल्लवग्ग, पृ0–371, भिक्षुणी विनय, पृ0–5
3. आई0बी0 हार्नर : विमेन अण्डर प्रिमिटिव बुद्धिज्म, पृ0–120
   पालि प्रापर नेम्स भाग से द्वितीय पृ0–743
4. चुल्लवग्ग : पृ0–773, भिक्षुणी विनय, पृ0–3
5. वही, पृ0–5
6. विमल चरण ला : विमेन इन बुद्धिस्ट लिटरेचर; पृ0–16
7. राहुल सांकृत्यायन : विनय पिटक, पृ0–519,520
8. चुल्लवग्गा : पृ0–374, भिक्षुणी विनय, पृ0–10
9. वही, पृ0–374,375
10. गुस्ताव रांध : भिक्षुणी विनय, पृ0–13
11. चुल्लवग्ग : पृ0–376,77, भिक्षुणी विनय, पृ0–12
12. चुल्लवग्ग का यह 7वां गुरूधर्म महासांधिको के भिक्षुणी विनय में नही मिलता। इसकी जगह उनका चौथा गुरूधर्म मिला है- भक्ताग्रं शय्यासनं बिहारी च भिक्षुणीदि भिक्षुतो भिक्षुसंधातो सादयितव्यम्।
13. डॉ0 अरूण प्रताप सिंह : जैन एवं बौद्ध भिक्षुणी संघ, पृ0–11
14. चुल्लवग्गा, पृ0–377, भिक्षुणी विनय, पृ0–8
15. वही, पृ0–411
16. एस0 बाल : बुद्धिस्ट रिकॉर्ड आव दि वेस्टर्न वर्ल्ड, प्रथम भाग, पृ0–12
17. वही, पृ0–213